विचार बिन्दु

दया और सत्यता परस्पर मिलते हैं, धर्म और शांति एक-दूसरे का साथ देतें हैं। –बाइबल

कहीं से तो शुरुआत करनी ही होगी!

भारतीय राजनीतिक परिदृश्य की एक बहुत दिलचस्प विशेषता यह है कि हम नागरिक गण एक साथ ही एकाधिक परस्पर विरोधी बातों को अपना समर्थन देते हैं। अब यही बात लें कि हर चुनाव में राजनीतिक दल बढ़-चढ़कर मुफ़्त में (मुझे इस अभिव्यक्ति पर हमेशा आपत्ति होती है!) बहुत कुछ देने का वादा करते हैं, और हम नागरिक अन्य बातों के अलावा इस बात से भी खूब प्रभावित होते हैं। लेकिन वे ही राजनीतिक दल अलग-अलग अवसरों पर मुफ़्त में दी जाने वाली इन सुविधाओं वगैरह का विरोध भी करते हैं और हम उस समय भी उनको अपना समर्थन देते हैं। ऐसे में यह तय करना कठिन हो जाता है कि हम नागरिक अपनी सरकारों से चाहते क्या हैं? क्या हम यह चाहते हैं कि हमारी चुनी हुई सरकारें हम नागरिकों को बहुत सारी सुविधाएं इस तरह सुलभ कराएं कि हमें उनके लिए अलग से कोई मूल्य न चुकाना पड़े, या फिर हम यह चाहते हैं कि सरकारें हमें कुछ भी बिना मूल्य के उपलब्ध न कराएं। पिछले कुछ वर्षों में हमने दोनों ही प्रवृत्तियों में बहुत वृद्धि देखी है। आज़ादी के तुरंत बाद के वर्षों में तत्कालीन सरकारों ने आधारभूत सुविधाओं जैसे चिकित्सा, शिक्षा आदि पर काफी ध्यान दिया और हमें बहुत सारी सुविधाएं निशुल्क या अत्यल्प मूल्य चुकाने पर मिलीं। यह व्यवस्था बहुत समय तक ज़ारी रही। लेकिन आहिस्ता-आहिस्ता इस सबमें बदलाव हुआ और अब अतीत में जो सुविधाएं निशुल्क दी जाती थीं उन्हें भी या तो सशुल्क कर दिया गया या उन्हें देने के लिए हम पर एहसान लादा गया। बहुत बार सुविधाओं का रूप बदल कर या उन्हें झाड-पोंछकर थोड़ा-सा नया रूप देकर उनके लिए धन राशि वसूल की जाने लगी। बहुत सारी सुविधाओं को किसी न किसी बहाने स्थगित कर दिया गया, और जब वह बहाना नहीं रहा तब भी उन सुविधाओं को फिर से बहाल नहीं किया गया। इन बातों के उदाहरण देने की ज़रूरत नहीं है।

यहां हम एक सैद्धांतिक बिंदु पर चर्चा करना चाहते हैं। बिंदु यह है कि क्या निर्वाचित सरकारों द्वारा अपने नागरिकों को कुछ भी निशुल्क दिया जाना उचित है! यहीं यह बात स्पष्ट हो जानी चाहिए कि असल में तो सरकारें निशुल्क कुछ भी नहीं देती हैं। हम टैक्स आदि के रूप में उन्हें जो धन राशि देते हैं उसी में से वे हमें कुछ सुविधाएं प्रदान करके उसके लिए वोट के रूप में हमारी कृतज्ञता अर्जित करने के प्रयास करती हैं। एक तरह से जो सुविधाएं हमें इस तरह बिना मूल्य लिए दी जाती हैं उनके लिए भुगतान तो हम पहले ही कर चुके होते हैं। इन प्री-पेड सुविधाओं को मुफ़्त सुविधा कहना निहायत ही आपत्तिजनक है। अब यहीं यह बात भी आती है कि कुछ लोग कम टैक्स देते हैं कुछ अधिक देते हैं। इन सभी को एक-सी सुविधाएं कैसे और क्यों दी जाएं, और इससे भी आगे यह बात कि सामान्यत: सरकारी निशुल्क सुविधाएं समाज के उस तबके को दी जाती हैं जो अल्प आय वर्ग से आता है (और स्वभावत: इसी कारण वह टैक्स भी कम देता है), जबकि समाज का अपेक्षाकृत संपन्न वर्ग न केवल इनमें से बहुत सारी सुविधाओं से वंचित रखा जाता है, उस पर कर भार भी ज़्यादा थोपा जाता है। पहली नज़र में यह व्यवस्था अतार्किक और दोषपूर्ण लग सकती है। लेकिन जब आप इस पर गहराई से विचार करते हैं तो तस्वीर का दूसरा पहलू सामने आता है। पहली बात तो यह किसी भी सरकार का आदर्श 'पैसा फेंको तमाशा देखो' मॉडल नहीं हो सकता और होना भी नहीं चाहिए। अगर हमें पैसों से ही कोई सुविधा खरीदनी है तो फिर सरकार नाम के मध्यस्थ की ज़रूरत ही क्या है! असल में सरकार की भूमिका एक समरस और समता की तरफ बढ़ने वाला समाज बनाने की भी होती है। इसी के निमित्त उससे यह अपेक्षा की जाती है कि वह ज़रूरतमंदों को अपना संबल प्रदान कर उन्हें समर्थों की कतार में खड़ा होने काबिल बनाए। इस बात को याद किया जा सकता है कि आज़ादी के बाद वाले वर्षों में अगर मेरी पीढ़ी के लोगों को सरकारी शिक्षण संस्थाओं का संबल नहीं मिला होता तो हम में से अधिकांश लोग शिक्षा प्राप्त कर ही नहीं सकते थे। अगर सरकारों ने मुफ्त टीकाकरण जैसी अनगिनत योजनाएं नहीं चलाई होतीं तो चेचक, पोलियो जैसे अनेक प्राणघातक रोगों से हमारा देश मुक्त हो ही नहीं सकता था। यह बात अलग है कि अब हम उस मॉडल को करीब-करीब त्याग चुके हैं। यह भी समझा जाना चाहिए कि जो अमीर हैं उनकी अमीरी में बहुत बड़ा योगदान उनका भी होता है जो ग़रीब हैं, इसलिए अगर सरकारें कम साधन वालों के लिए कुछ करती हैं तो यह कोई अन्याय नहीं है। लेकिन अब हम देख रहे हैं कि हमारी सरकारें पूरी तरह अमीरों की तरफ झुक चुकी हैं। अब हमारी सरकारें अमीरों के करोड़ों रुपये के कर्ज़ माफ़ करने से पहले पल भर को भी नहीं सोचती हैं, अपने मनचाहे किसी इवेण्ट को सौ करोड़ रुपये दे देना उनके लिए बहुत मामूली बात होती है, लेकिन चिकित्सा और शिक्षा जैसी ज़रूरी मदों पर खर्च करते वक़्त उन्हें यह बात याद आती है कि उनके आर्थिक संसाधन बहुत सीमित हैं। सामान्य जन को मिलने वाली सुविधाओं में कटौती करके, आम जीवन की चीज़ों पर करों का बोझ बढ़ाकर वे अमीरों के करों का भार कम करने की चिंता में ज़्यादा डूबने लगी हैं।

> **बड़े लोगों की कर्ज़ माफ़ी पर, भले ही वे सत्ता के कितने भी निकट क्यों न हों, अविलंब रोक लगनी चाहिए। सरकारी अमले पर होने वाला अपव्यय रोका जाना चाहिए। क्या यह बात किसी को नज़र नहीं आती है कि सरकारें विज्ञापन पर कितनी बड़ी धनराशि खर्च करती हैं? इन विज्ञापनों का मकसद क्या है, यह किसी से नहीं छिपा है।**

कहने-सुनने में यह बात बहुत भली लगती है कि कोई भी सरकार समाज के किसी भी वर्ग को तथाकथित मुफ़्त रूप से कुछ न दे, लेकिन हम जिस तरह की व्यवस्थाओं के आदी हो चुके हैं, उनके चलते ऐसा होना नामुमकिन लगता है। वैसे यह व्यावहारिक है भी नहीं। पहला सवाल तो यही उठेगा कि हम सरकार को टैक्स देते किस लिए हैं? क्या केवल सरकार को चलायमान रखने के लिए हम टैक्स अदा करते हैं? जी नहीं। हम अपनी ज़िंदगी को बेहतर बनाने की व्यवस्था के लिए टैक्स अदा करते हैं और सरकार से अपेक्षा करते हैं कि वह हमारी चिंता करेगी और जब हमें ज़रूरत पडेगी, हमारी मदद को आगे आएगी। निश्चय ही यह बात तर्क संगत होगी कि सरकार को बिना सोचे-समझे सभी को बहुत सारी सुविधाएं निशुल्क नहीं दे देनी चाहिएं। ऐसा करना हमारे संसाधनों का अपव्यय होगा। मसलन अगर कोई सरकार कहे कि वह सारे नागरिकों को इतने यूनिट बिजली मुफ्त देगी तो यह बात अनुचित होगी। उसे साधन संपन्न और साधन रहित में अंतर तो करना ही चाहिए। अलबत्ता उसकी प्राथमिकता में स्वास्थ्य सेवा, शिक्षा, खाद्य सुरक्षा, पेय जल जैसी ज़रूरी सुविधाएं होनी चाहिएं। कोई हर्ज़ नहीं कि प्राथमिक स्तर की शिक्षा सबको पूर्णत: निशुल्क दी जाए और इसके बाद जैसे-जैसे आगे की पढ़ाई हो, वहां अल्प साधन वालों को अधिक और साधन संपन्नों को कम संबल देकर शिक्षा का प्रसार किया जाए। यही बात चिकित्सा सुविधा के लिए भी कही जाएगी। देश के हर नागरिक को शुद्ध पेयजल क्यों नहीं मिलना चाहिए? क्यों हमें बोतलबंद पानी खरीदने के लिए मज़बूर होना चाहिए? समुचित संख्या में सार्वजनिक शौचालय होने ही चाहिए। और शौचालय से पहले यह कि हर नागरिक को पेट भर खाना मिले, यह ज़िम्मेदारी सरकार को अपने कंधों पर लेनी चाहिए। बेशक उसका प्रयत्न यह हो कि लोग इतने सक्षम बनें कि उन्हें सरकारी निशुल्क राशन की ज़रूरत न रहे, लेकिन किसी को भूखे मरने देना अक्षम्य है। सार्वजनिक परिवहन, और उससे भी पहले पर्याप्त सडकें हर नागरिक का अधिकार माना जाना चाहिए। जब हम शिक्षा की बात करते हैं तो जहां यह कहना ज़रूरी है कि इण्टरनेट की सुलभता और उसका सस्ता होना ज़रूरी है वहीं मुफ्त लैपटॉप जैसी बात केवल लोकलुभावन लगती है। न केवल विद्यार्थियों को, कभी पत्रकारों को और कभी जन प्रतिनिधियों को मुफ्त लैपटॉप बांटकर संसाधनों को जो पलीता लगाया जाता है, उसे उचित नहीं माना जा सकता।

हमारे यहां सीमित संसाधनों को ज़रूरतमंदों तक पहुंचाने की बजाय उसका रुख साधन संपन्नों की तरफ मोड़ देने की ग़लत परंपरा बन चुकी है। हमारे जन प्रतिनिधियों को न जाने क्या-क्या मुफ़्त में मिलता है। वह सब बंद होना चाहिए। बेशक उन्हें सम्मानजनक वेतन मिलना चाहिए, लेकिन उसके बाद यह होना चाहिए कि उन्हें जिस चीज़ या सुविधा की ज़रूरत है उसे वे भी आम नागरिक की तरह हासिल करें। बड़े लोगों की कर्ज़ माफ़ी पर, भले ही वे सत्ता के कितने भी निकट क्यों न हों, अविलंब रोक लगनी चाहिए। सरकारी अमले पर होने वाला अपव्यय रोका जाना चाहिए। क्या यह बात किसी को नज़र नहीं आती है कि सरकारें विज्ञापन पर कितनी बड़ी धनराशि खर्च करती हैं? इन विज्ञापनों का मकसद क्या है, यह किसी से नहीं छिपा है। और इसी तरह हमारे निर्वाचित जन प्रतिनिधिगण देश-विदेश की अपनी यात्राओं पर जो बेहिसाब पैसा पानी की तरह बहाते हैं, उस पर रोक क्यों नहीं लगनी चाहिए? इनमें से बहुत सारी यात्राएं या तो धार्मिक, पारिवारिक होती हैं या फिर उन दलों की चुनावी सम्भावनाओं का विस्तार करने के लिए होती हैं जिनसे वे सम्बद्ध होते हैं। सोचिये यही पैसा अगर वंचितों पर खर्च किया जाए तो देश के हालात कितनी जल्दी बदल जाएं!

आखिर कभी और कहीं से तो शुरुआत करनी ही होगी।

–अतिथि संपादक,
डॉ. दुर्गाप्रसाद अग्रवाल,
(शिक्षाविद और साहित्यकार)

आस्था-धर्म-विश्वास-तर्क

महावीर सिंह

आज कल अखबार, टीवी पर आस्था शब्द का, सही-गलत खूब प्रचार-दुष्प्रचार हो रहा है। कोई कहता है फलां काम से-बोल से सनातन आस्था आहत हुई है। कोई हिन्दू आस्था को आहत बता देता है। इसाई-इस्लाम व दूसरे धर्म-पंथों को मानने वालों की भी आस्थाएं समय समय पर घायल हो जाती है। मानों आस्था कोउ छुई मुई का पौधा है कि किसी नें उसकी तरफ अंगुली की नहीं कि मुरझायी नहीं।

वैसे हर तरह की आस्था वालों के पास अपने-अपने पठे भी है जो आस्था की तरफ तिरछी नजर से देखने भर पर, लोगों को छठी का दूध याद दिलाने को रात और दिन दंड पेलते रहते है। यह पठे अपने-अपने धुरंधर तथाकथित बड़े आस्थावान उस्तादों से खाद- बीज-जीवन वायु लेते रहते है। उस्ताद लोग भी दिल खोल कर पठों इन सब चीजों की निर्बाध रूप से आपूर्ति करते है। ठीक जैसे वोट लेने के लिए विभिन्न प्रकार से कैश-वस्तुएं (काइंड) का राशन पानी देते रहते है।

वैसे इन दिनों यह भी सुनने, पढ़ने को मिलता रहता है कि फलां-फलां लोगों ने अपनी पहले वाली धर्म आस्था बदल ली है। ऐसी बदला बदली जरा कुछ कम होता है। नेताओं-राजनीतिक विचारधाराओं के प्रति आस्थाएं तो आए दिन फटाफट, दिन में कई कई बार भी, बदलती ही रहती हैं। वैसे धर्म का सहारा लेकर आस्था बदलने वालों की आस्था कोन सी मानी जाए? आओ, कुछ दान दक्षिणा दो और बदले में आस्था बदल दो। आइए जरा अब कुछ गम्भीर चर्चा करें::--सर्व प्रथम इस पर विचार करें कि आस्था के मूल में, मनुष्य की, परोक्ष-अपरोक्ष से ईश्वर के अस्तित्व की स्वीकृति है।

प्रश्न उठता है कि कुछ लोग जो ईश्वर के अस्तिव को स्वीकार ही नहीं करते, उनकी आस्था क्या मानी जाए? बहुत से लोग मानते हैं कि दुनिया में नास्तिकों के कारण कोई ज्यादा फसाद नहीं होते। आस्था के नाम पर फसाद करने का विशेषाधिकर आस्थावानों के पास ही रहता है।

प्रश्न यह भी हैं----आस्था किसी मनुष्य का एक स्थायी गुण है या परिवर्तन शील? एक नवजात शिशु का धर्म या आस्था क्या?

एक नवजात का जन्म के वक्त न कोई धर्म होता है, न कोई आस्था होती है। धर्म के नाम पर, उस नवजात पर उसके माता-पिता का धर्म थोप दिया जाता है। मां-बाप अलग-अलग धर्मावलम्बी हो तो नवजात का धर्म क्या? दोनों की सहमति वाला या दोनों नें से जिसकी पहचान ज्यादा बड़ी हो या दोनोब में से जिसकी ज्यादा चलती हो वह या परिवार या समाज जो तय करदे वह?? अर्थात नवजात के धर्म में उसका कोई महत्व नहीं सिवाय इसके की उसे एक नई पहचान ओढ़नी है जिसमें उसकी कोउ मर्जी, स्वीकृति नहीं होती है।

जन्म के समय व 3,4,5 साल बाद तक, उसकी अर्थात नए आए मानव प्राणी की किसी धर्म, सम्प्रदाय, पूजा-पाठ के प्रति कोई आस्था नहीं होती।उसका विश्वास मात्र अपनी माँ में होता है कि वह उसको भूख होने पर दूध पिलाएगी और दूसरे-तीसरे जरूरी काम करेगी, उसे चोट आदि से बचाएगी। उसके साथ हंसेगी, बोलेगी। उसे हंसना-बोलना-चलना सिखाएगी।

धीरे-धीरे यही नवजात अपने चारों की चीजों को आश्चर्य से देखता है। अपने हिसाब से उन्हें समझने का प्रयास भी करता है। वह प्रकृति को निहारता है, उस से आश्चर्यचकित भी होता है। यह उसकी अपने चारों ओर के परिवेश की खोज यात्रा की शरुआत है।

इसी स्टेज पर वह अपने माता पिता,घर के बड़े-बूढ़ों को, दूसरे परिवारों के लोगों को कुछ ऐसे कार्य करता देखता है जिन्हें हम धर्म के बाह्य लक्षण कहते है जैसे कुछ विशेष चित्रों (देवी देवताओं) के सामने नतमस्तक होना, उनके लिए कुछ विशेष खान-पान तैयार कर उन्हें अर्पित करना, कुछ विशेष प्रकार के वाक्य बोलना, क्रियाएं करना आदि। यहीं से उस बालक, बालिका की धार्मिक-अस्थावाली यात्रा शुरू होती है। उसके मस्तिष्क का अनुकूलन/अनुबन्धन (कंडिशनिंग) ऐसा होता रहता है कि वह तथाकथित धर्म के बाह्य लक्षणों पर विचार करना छोड कर, उन बातों, पूजा-पाठ क्रियाओं, मंदिर जाने आदि को बिना कोई प्रश्न किए मानने लगता है। यही प्रश्न रहित स्वीकारोक्ति आस्था है।

आस्था है कि गंगा जी में या किसी अन्य पवित्र नदी-सरोवर में स्नान करने से पाप धूल जाते है--बाप-दादा-परिवारजनों-समाज यही मानता आया है। आस्था है कि पूर्वजों की अस्थियों को गंगा, यमुना, शिप्रा, पुष्कर आदि स्थानों में विसर्जन करने से उन्हें मोक्ष प्राप्त होता है। अब यह बात अलग है कि कुछ पूर्वजों के बेटे पोते वितीय दृष्टि से सक्षम हैं सो वे तत्काल अस्थि विसर्जन कर पूर्वजों को तत्काल मोक्ष दिलवा देते है। कुछ बेचारे गरीब होते है सो वे 5,10साल प्रतीक्षा करते हैं और फिर 10,5 पूर्वजों को एक साथ ले जाकर, वर्षों बाद ही सही, एक साथ मोक्ष दिलवाते है।

विश्वास- आस्था का सम्बन्ध उन चीज़ों से है जो दिखाई नहीं देतीं किन्तु सदियों से, एक ही प्रकार की धार्मिक पहचान वाले लोग, मानते-करते आए है। लोग बिना तर्क वितर्क के उसे मानते है। इन मान्यताओं-परम्पराओं में उन्हें मानने वालों का कोई हाथ नहीं होता हैं पर वे इन्हें दृढ़तापूर्वक मानते है।यह लोग विश्वास को तर्क से ऊपर मानते है।

आम मनुष्य आस्था-विश्वास के बिना नहीं रह सकता क्योंकि जीवन के दुख-दर्द-कठिनायां आती ही आती है और एक सीमा से बाहर, इन सब से पार पाने की उसकी अकेले की क्षमता नहीं रहती। ऐसे समय में उसको आस्था-विश्वास ही साहस देता है। निराशाओं से पार पाने का आस्था-विश्वास ही उनका सहारा होता है। समय के साथ आस्था दृढ़ होती जाती है। यों भी कह सकते हैं--विश्वास-आस्था का अर्थ हुआ कि चिंताएं जिनका उसके पास समाधान नहीं, उन्हें आस्था को सौंप देना और चिंता मुक्त हो जाना।

दूसरे प्रकार से इसे यों समझ सकते है कि आस्था ऐसी शक्तियों पर विश्वास करना है जिन्हें किसी नें देखा नहीं, जिसे साबित नही किया जा सकता है। अगर आदमी साहस नहीं छोड़े तो आस्था से जीवन की जटिलताओं को समझने और जीवन को जीने का उद्देश्य मिलता है। थोड़ा अलग दृष्टि से देखें तो, आस्था-विश्वास किसी व्यक्ति का किसी बात या सदियों से चलती आ रही मान्यता के प्रति सहमति, भरोसा करना है। यह उन्हें दृढ़ता, क्षमता प्रदान करता है।

आस्था-विश्वास-ईश्वर आदि के बारे में कवियों, दार्शनिकों, विचारकों, वैज्ञानिकों का भी भिन्न-भिन्न नजरिया है:- इस विषय के वास्तविक शुद्ध हृदय चिंतकों, संतों आदि का मानना है कि आस्था, विश्वास, श्रद्धा, निष्ठा से ज्ञान व परमात्मा की प्राप्ति होती है। वैसे ईश्वर एक कल्पना है, देखा तो किसी नें है नहीं। एक नजरिया यह भी है कि हम आस्था के साथ जीवन को बेहतर तरीके से जी सकते है बशर्ते आस्था को तेरी मेरी आस्था में बांटकर उस पर फसाद नहीं करें।

"विश्वास आत्मा की आवाज है।" कर्म में शुद्धता ही सबसे बड़ी आस्था है। भारतीय मनीषियों का मानना है कर्म में धर्म हो और धर्म में सत्य व सात्विक कर्म हो,यही भगवत मार्ग है। इसके अभाव में कितने ही तीर्थ करो, यग्य-पूजा पाठ करो सब व्यर्थ है। गांधी जी के अनुसार तो सत्य ही ईश्वर है।

भारतीय दर्शन के अनुसार आस्था विचारों की अनेकता मानना, ईश्वर के अस्तित्व में दृढ़ विश्वास करना, कर्मफल-पुनर्जन्म में विश्वास करना है। अब यह बात अलग है कि आजकल यह विचारों की अनेकता वाली बात नए नए बहुत से धर्म ध्वजा वाहकों को कुछ कम ही पसंद है।

आस्था (मानें भगवान/ईश्वर) के सम्बंध में कुछ ओर विचारकों के विचार :- गांधी जी ने कहा है कि संकल्पवान, लक्ष्य के प्रति दृढ़ आस्था रखने वाले कुछ ही लोग इतिहास की धारा बदल देते हैं।

इमर्सन का मानना है–"मैनें जो कुछ देखा है,उससे मुझे उन सब चीजों के लिए सृष्टिकर्ता पर भरोसा करना सिखाया है जिन्हें मैनें नहीं देखा"(राल्फ वाल्डो इमर्सन)।

महान वैज्ञानिक अल्बर्ट आइंस्टीन के अनुसार--मैं ईश्वर की सत्ता को मानता हूं किन्तु वह ईश्वर ऐसा नहीं हो सकता जो ऊपर कहीं आकाश में बैठ कर शतरंज के पासे फैंक कर मनुष्यों का भाग्य निर्धारण करता हो। इसके विपरीत प्रसिद्ध वैज्ञानिक स्टीफन हॉकिंग नें ईश्वर के अस्तित्व को दृढ़तापूर्वक नकारा है। अन्य बहुत से वैज्ञानिक ईश्वर को मानते है, बहुत से नहीं मानते किन्तु किसी अदृश्य सुपर शक्ति के अस्तित्व को नकारते भी नहीं।

महान दार्शनिक अरस्तू का मानना था कि प्रभावशाली लोग ईश्वर की पूजा का बड़े स्तर पर दिखावा इसलिए करते है ताकि लोग उन्हें चुनौती नहीं दें। सर थॉमस ब्राउन के अनुसार मात्र संभावनाओं पर विश्वास आस्था नही बल्कि मात्र फिलोसोफी (दर्शन) है। एक लेटिन कहावत के अनुसार विश्वास न्याय की बहन है। अमरीका के पूर्व राष्ट्रपति अब्राहम लिंकन के अनुसार आस्था-विश्वास अंत तक उद्धेश्य प्राप्ति की शक्ति देता है। हेनरिक फ्रेडरिक के अनुसार विश्वास बिना प्रमाण के निश्चितता, आशा है जिस में कोई बाहरी आदेश नहीं होता, स्वप्रेण ही होती है।

इंग्लैंड के पूर्व प्रधान मंत्री बेंजामिन फ्रैंकलिन के अनुसार सांसारिक मामलों में विश्वास के बजाय उसके अभाव में आदमी संकटों से बच जाता है।

एक दृष्टिकोण यह भी है कि वैज्ञानिक सोच से मानव जानवर से आदमी बन गया। धर्मान्धता इंसान को जानवर से भी घटिया बना देती है। आस्था-धर्म मानने में कोई बुराई नही किन्तु धर्मान्धता-अंधविश्वासों से बचे रहना ही उचित मार्ग है।

अभी हाल ही में एक विभत्स समाचार किसी अखबार में पढ़ा--गुजरात में किसी गांव में एक तांत्रिक ने, सबके सामने, एक नाबालीग बच्ची की बलि दे दी। एक व्यक्ति का रास्ता बिल्ली काट गई तो बिल्ली को जला ही दिया। पुराने जमाने की कहानियां तो सुनते आए हैं कि बड़े शक्तिशाली लोग अपने किलों, हवेलियों में नर बलि देते थे, किन्तु इस युग में ऐसे कृत्यों को कैसे समझे??

शायद, हम लोग प्रतीक्षा करते ही रह जाएंगे कि कोई राजनीतिक दल, कोई तथाकथित सांस्कृतिक-सामाजिक संगठन इस प्रकार के अन्धविश्वासों के विरुद्ध शक्तिशाली आवाज उठाए, कोई बड़ी जनजागरण यात्राएं निकालें, इनके विरुद्ध कोई बड़ा आंदोलन करें।

जाते जाते सुधि पाठकों के लिए कुछ प्रश्न छोड़ रहा हूँ--क्या जैन, बौद्ध, सिक्ख, कबीर पंथी, दादू पंथी, व हिन्दू धर्म के अन्य पंथ सम्प्रदायों को मानने वाले सनातनी की श्रेणी में हैं या नही? इनकी आस्थाएं क्या हैं? कबीर वाणी, गुरुग्रन्थ साहिब व अन्य सम्प्रदायों के मार्गदर्शक ग्रन्थ इनके आस्था के प्रतीक हैं या नहीं? क्या इस्लाम, ईसाई, जैन, बौद्ध आदि धर्म मानने वाले, उनके धर्म के अनुसार किसी प्रकार के सनातन नियमों की पालना नही करते क्या? क्या अंधविस्वास आस्था है? अगर साधु संत सत्ता के लिए लालायित हों तो क्या यह मानें की असली ताकत सत्ता में है, शायद ईश्वर में नहीं? सभी साधु-संत-धर्मप्रचारक यह क्यों कहते सुने जाते हैं कि तर्क नहीं आस्था-श्रद्धा रखो मनोइच्छयाएँ पूर्ण होंगी? यह लोग तर्क से क्यों बिदकते हैं?

–महावीर सिह, पूर्व आईएएस

दो परीक्षाओं में से एक परीक्षा की तिथि में संशोधन करने की मांग

- **23 मार्च को आरपीएससी द्वारा तथा 22 मार्च को शिक्षा विभाग द्वारा 8वीं बोर्ड परीक्षा का आयोजन करने के निर्देश जारी हुए हैं**
- **बोर्ड परीक्षा एवं प्रतियोगी परीक्षाओं के आयोजन में 24 घंटे का भी अंतराल नहीं है, संस्था प्रधान केंद्राधीक्षक के समक्ष संकट आया**

बीकानेर, (निसं)। शिक्षा विभाग एवं अन्य परीक्षा ऐजेंसियों में तालमेल के अभाव में आगामी 23 मार्च को आरपीएससी द्वारा तथा 22 मार्च को दोपहर पारी में 2 से 4.30 तक शिक्षा विभाग द्वारा 8 वीं बोर्ड परीक्षा का आयोजन करने के निर्देश जारी हुए हैं, जिस कारण से संस्था प्रधान एवं केंद्र अधीक्षक के सामने एक परीक्षा को पूर्ण करना तथा दूसरे दिन सुबह की पारी में दूसरी परीक्षा का आयोजन होने से असमंजसता की स्थिति उत्पन्न हो गई है कि इतने कम अंतराल में बोर्ड परीक्षा तथा प्रतियोगी परीक्षाओं के सिटिंग व्यवस्था किस प्रकार से करे। राजस्थान शिक्षक संघ राष्ट्रीय ने इस प्रकार कम अंतराल में परीक्षा आयोजित करने को हास्यास्पद बताते हुए दोनों परीक्षाओं में एक परीक्षा की तिथियों में संशोधन करने की मांग की है।

शिक्षक संघ राष्ट्रीय के प्रदेश वरिष्ठ उपाध्यक्ष रवि आचार्य ने शिक्षा निदेशक बीकानेर एवं आरपीएससी अध्यक्ष को पत्र भेजकर अवगत करवाया है कि आपसी तालमेल के अभाव से संस्था प्रधान केंद्राधीक्षक के समक्ष संकट खड़ा हो गया है कि दोनों परीक्षाओं की गोपनीयता के साथ सफल संचालन कम अंतराल में किस प्रकार करें।

संस्था प्रधान कम केंद्राधीक्षक मानसिक तनाव में आ गए हैं। आचार्य ने पत्र में लिखा है कि कम अंतराल में बोर्ड परीक्षा एवं प्रतियोगी परीक्षाओं हेतु सभी सुविधाओं का आंकलन कर सिटिंग व्यवस्थाओं को पूर्ण करना होता है जो 24 घंटे के कम अंतराल में सम्भव नहीं होगा।

उक्त 24 घंटों में रात्रिकाल का समय भी सम्मिलित है, इसलिए शिक्षा विभाग या आरपीएससी परीक्षा तिथियों पर पुन: विचार करते हुए एक परीक्षा की तिथियां में बदलाव करने का आपस में संवाद कर निर्णय करें ताकि केंद्राधीक्षक तनाव मुक्त होकर परीक्षाएं संपन्न करवा सके एवं गोपनीयता भी बनी रहे।

जैतसर में घना कोहरा छाने से दृश्यता कम

- **मार्च में इतना घना कोहरा पहली बार देखा गया है, कोहरे के कारण तापमान 2 से 3 डिग्री गिरा**
- **सुबह और रात के समय बढ़ी ठंडक से लोगों को गर्म कपड़े पहनने पड़ रहे हैं**

श्रीगंगानगर, (निसं)। जिले के जैतसर और आसपास के क्षेत्रों में सुबह घना कोहरा छाया रहा। शुक्रवार रात और शनिवार सुबह हुई हल्की बारिश और तेज हवाओं के बाद कोहरे की स्थिति और गंभीर हो गई है। कोहरे के कारण तापमान में 2 से 3 डिग्री की गिरावट दर्ज की गई है। मार्च में इतना घना कोहरा पहली बार देखा गया है। सुबह और रात के समय बढ़ी ठंडक के कारण लोगों को गर्म कपड़े पहनने पड़ रहे हैं।

किसानों के लिए यह कोहरा लाभदायक साबित हो सकता है। विशेषकर गेहूं की फसल के लिए यह अनुकूल माना जा रहा है। किसानों का कहना है कि इससे उनकी पैदावार में वृद्धि की संभावना है। श्रीविजयनगर, रामसिंहपुर, सरदारगढ़, स्वरूपसर, बुगिया, जानकीदासवाला, फरीदसर और कीकरवाली जोहड़ी में भी कोहरे ने जनजीवन को प्रभावित किया है।

जैतसर थानाधिकारी इमरान खान ने वाहन ड्राइवरों से धीमी गति से वाहन चलाने की अपील की है। उन्होंने बिना जरूरत घर से बाहर न निकलने की सलाह दी है। साथ ही यात्रा के दौरान सावधानी बरतने को कहा है।

कम वोल्टेज और बिजली कटौती से ग्रामीण परेशान

श्रीगंगानगर, (निसं)। घमंडिया चक 73 एलएनपी, निरवाणा, सरदारपुरा बीका व जीवनदेसर जीएसएस के बिजली उपभोक्ता व किसान बार-बार कटौती से परेशान हैं।

कम वोल्टेज के कारण खेतों में ट्यूबवैल पर लगी मोटरें व घरों में उपकरण जल रहे हैं। मोटरों पर 400 की जगह 280 वोल्टेज पहुंच रही है। इसका मुख्य कारण 33 केवी विद्युत लाइन पर चार जीएसएस जुड़े होने से अत्यधिक लोड व आगे थ्री फेज बिजली की बहुत कम वोल्टेज होना है। 33 केवी विद्युत लाइन पर जीवनदेसर, 73 एलएनपी, निरवाणा व सरदारपुरा बीका जीएसएस पर 60 से अधिक गांव व 1200 किसानों के यहां मोटर कनेक्शन हैं। ग्रामीणों का कहना है कि निरवाणा व सरदारपुरा बीका जीएसएस की 33 केवी लाइन को पूरा कर सीधा जोड़ने से ही राहत मिलने की उम्मीद है।

डिस्कॉम सूत्रों के अनुसार पहले 73 एलएनपी व जीवनदेसर जीएसएस के लिए 33 केवी लाइन बींझबायला से 132 केवी जीएसएस से जोड़ी गई थी। चक 73 एलएनपी व जीवनदेसर जीएसएस पर करीब 450 ट्यूबवेल कनेक्शन है। वोल्टेज सुधार के लिए इन जीएसएस को अलग किया गया, लेकिन निरवाणा व सरदारपुरा बीका जीएसएस पर अधिक लोड व कम वोल्टेज सुधार के लिए बींझबायला से सीधे एमआरएम निरवाणा जीएसएस को 33 केवी लाइन खींची गई। विवाद के कारण 4 वर्ष से काम अधूरा है।

उपभोक्ताओं का कहना है कि सूरतगढ़ विद्युत निगम के अधिकारियों ने अनदेखी की। फलस्वरूप लाइन का काम पूरा न करवाकर 73 एलएनपी जीएसएस की 33 केवी लाइन में ब्रेकर मशीन लगाकर निरवाणा व सरदारपुरा बीका जीएसएस को अस्थायी रूप से जोड़ दिया। इससे निरवाणा व सरदारपुरा बीका के किसानों व उपभोक्ताओं को राहत मिलना तो दूर, बल्कि 73 एलएनपी व जीवनदेसर में बार-बार कटौती व थ्री फेज में कम वोल्टेज की परेशानी बढ़ गई है। अब 33 केवी में फाल्ट आने पर चारों जीएसएस एक साथ ठप हो जाते हैं।

राशिफल

पंडित अनिल शर्मा

सोमवार 17 मार्च, 2025

चैत्र मास, कृष्ण पक्ष, तृतीया तिथि, सोमवार, विक्रम संवत 2081, चित्रा नक्षत्र दिन 2:47 तक, धुव्र योग दिन 3:45 तक, विष्टि करण सायं 7:34 तक, चन्द्रमा आज तुला राशि में संचार करेगा।

ग्रह स्थिति: सूर्य-मीन, चन्द्रमा-तुला, मंगल-मिथुन, बुध-मीन, गुरू-वृष, शुक्र-मीन, शनि-कुम्भ, राहु-मीन, केतु-कन्या राशि में।

आज भद्रा सायं 2:34 तक है। आज कल्पादि, चतुर्थी व्रत है।

श्रेष्ठ चौघड़िया: अमृत सूर्योदय से 8:07 तक, शुभ 9:37 से 11:06 तक, चर 2:05 से 3:34 तक, लाभ-अमृत 3:34 से सूर्यास्त तक।

राहूकाल: 7:30 से 9:00 तक। सूर्योदय 6:38, सूर्यास्त 6:33

मेष

परिवार में आपसी सहयोग-समन्वय बना रहेगा। परिवार में शुभ-मांगलिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं। व्यावसायिक कार्यों में प्रगति होगी। व्यावसायिक आय में वृद्धि होगी।

वृष

विवादित मामलों से राहत मिल सकती है। अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। स्वास्थ्य में सुधार होगा। व्यावसायिक कार्यों में व्यस्तता बनी रहेगी। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

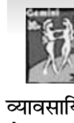

मिथुन

व्यावसायिक कार्यों के कारण भागदौड़ रहेगी। व्यावसायिक खर्चों में अनावश्यक वृद्धि हो सकती है। स्वभाव की तेजी पर नियंत्रण रखें।

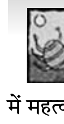

कर्क

घर-परिवार में सुख-सुविधाएं बढ़ेगी। परिवार में महत्वपूर्ण कार्य सम्पन्न हो सकते हैं। व्यावसायिक यात्रा संभव है। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

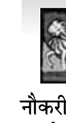

सिंह

नौकरीपेशा व्यक्तियों का प्रभाव-प्रभुत्व बढ़ेगा। नौकरीपेशा व्यक्तियों को महत्वपूर्ण जिम्मेदारी मिल सकती है। व्यावसायिक स्थिति ठीक रहेगी। परिवार में शुभ संदेश प्राप्त होंगे।

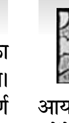

कन्या

आर्थिक/वित्तीय मामलों के लिए दिन अच्छा रहेगा। आय में वृद्धि होगी। व्यावसायिक संपर्क बनेंगे। आज धार्मिक-मांगलिक कार्यों में भाग ले सकते हैं।

तुला

व्यावसायिक कार्यों में व्यस्तता बनी रहेगी। महत्वपूर्ण कार्य योजना का क्रियान्वयन होगा। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी। आज आवश्यक और महत्वपूर्ण कार्य योजनानुसार सम्पन्न हो सकते हैं।

वृश्चिक

घर-गृहस्थी के खर्चों में अनावश्यक वृद्धि हो सकती है। पारिवारिक कार्यों के कारण भागदौड़ रहेगी। आज अनर्गल कार्यों में समय खराब हो सकता है।

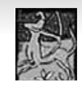

धनु

आर्थिक/वित्तीय मामलों के लिए दिन अच्छा रहेगा। अटका हुआ धन प्राप्त होगा। व्यावसायिक स्थिति ठीक रहेगी। परिवार में चल रहे आपसी मतभेद समाप्त होंगे।

मकर

व्यावसायिक कार्यों को प्राथमिकता से करने का प्रयास करें। अटके हुए कार्य शीघ्रता/सुगमता से बनने लगेंगे। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

कुंभ

नवीन कार्यों के संबंध में सकारात्मक आश्वासन प्राप्त होंगे। अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। व्यावसायिक कार्यों के संबंध में उचित सोच-विचार हो सकता है।

मीन

चन्द्रमा अष्टम भाव में शुभ नहीं है। नवीन कार्यों को टालना ठीक रहेगा। आवश्यक कार्यों में विलम्ब हो सकता है। बनते कार्य बिगड़ सकते हैं। यात्रा टालना ठीक रहेगा।